हमारे समय में मुक्तिबोध

सम्पादक
ए. अरविंदाक्षन

वाणी प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002
फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710
शाखाएँ
अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार
कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश
महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र
www.vaniprakashan.in
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in
HAMARE SAMAY MEIN MUKTIBODH
Edited by A. Arvindakshan
ISBN : 978-93-88684-19-4
Criticism
© सम्पादक एवं लेखकगण
प्रथम संस्करण 2019
मूल्य : ₹ 795
इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।
एम.एस. प्रिंटर्स, दिल्ली-110 095 में मुद्रित
वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

भूमिका

मुक्तिबोध के जन्मशताब्दी-वर्ष का समापन हो चुका है। ले
का जो प्रभाव हिन्दी के पाठक समाज पर पड़ा है या पड़
नहीं हो सकता है। उनकी रचनात्मकता के अन्दर जब भी
नया कुछ हाथ लगता है और वह नया हमें 'होंट' करता
वाली उनकी रचनाएँ अब भी क्यों ताज़ी लग रही हैं? चाहे
या समीक्षा, बीते हुए समय की है कहकर हम उन्हें अनदेखा
कारण स्पष्ट है कि संघर्ष का प्रखर एवं तेजस्वी आग उनकी र
बनाती है। उनके व्यक्तित्व में तथा रचना-व्यक्तित्व में यह
आज भी यह ताप प्रत्येक दृष्टि-सम्पन्न पाठक को कनक-स
आत्मसंघर्ष का घोर ताप है। अपने समय में सही अर्थ में जी
पूरित एक रचनाकार अकसर आने वाले समय को देख पात
महावर्तमान को भी देख पाता है। मुक्तिबोध उस महावर्तम
सच के सतहीपन के प्रति उनका कोई आकर्षण नहीं था।
अन्वेषक-रचनाकार थे। वह एक निरन्तर अन्वेषण था उनक
मध्य मुक्तिबोध का देहावसान हुआ। पर उनकी रचनाएँ जी
की आशंकाओं और संघर्ष की उत्ताल तरंगों से भरी उनकी र
के मध्य समाप्त होने वाली नहीं थीं। साम्राज्यवादी साँपों और
की आवाज़ सुनने वाली उनकी रचनाएँ भविष्य के ख़तरों से
भविष्य के दुर्दिनों से, संस्कृति की तमाम अमानवीय गतिविधि
परिचित थीं। ऐसी रचनाएँ रचनाकार के न रहने से समाप्त
यहाँ पर उनकी उक्ति 'कभी ख़त्म नहीं होतीं कविताएँ'—प्रासं
रचनाकाल तक सीमित न होने वाली उनकी रचनाएँ, जो आने
को जब समेटती हैं तो उसका समाप्त होना कठिन है। जो कठि
है वह अपने भीतर प्रत्याशा के अरुण कमल को जीवित रख
हमारी चेतना की निरन्तरता को ही सुनिश्चित करती है। 'क

असहमतियों का अनुकम्पन : 'क्लॉड ईथरली'

शान्ती नायर

मुक्तिबोध के प्रौढ़ रचनात्मक दौर में लिखी गयी कहानी है 'क्लॉड ईथरली' अणुयुद्ध की भीषणता को और नृशंसता के अनन्तर दीख पड़ने वाली दयनीयता की अपरिहार्यता को उकेरती हुई कहानी एक बड़े कैनवास पर सूक्ष्म रेखाओं के साथ फैलती है। पूँजीवादी व्यवस्था को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में कहानी देखती है, जिसमें साम्राज्यवाद भी सन्निहित है। अमेरिका कहानी में आद्यान्त बरकरार है तो उस देश के एक नागरिक क्लॉड ईथरली नामक पात्र को अक्स बनाकर पूरी कहानी चलती है। युद्ध और आधिपत्य की मानसिकता मनुष्य में जिस सोच को उत्पन्न करती है। उसमें न तो मानवीय मूल्यों का स्थान है, न धार्मिक विश्वासों का, न भाईचारे का।

कहानी के कैनवास पर मुक्तिबोध तीन पात्रों को उतारते हैं जिनमें दो पात्र कहानी के वर्तमान में सक्रिय दीख पड़ते हैं। परन्तु कहानी का केन्द्रीय पात्र क्लॉड ईथरली, जो इस कहानी के शीर्षक का भी हक़दार है, उसकी भूमिका कहानी के वर्तमान में बहुत कम प्रतिशत ही है। उसकी उपस्थिति कहानी के वर्तमान में केवल इतनी है कि वह निसैनी पर चढ़कर इमारत के भीतर देखने वाले कथावाचक 'मैं' को आकस्मात दिखायी दे जाता है—"छत के नीचे ढिलाई से गोल-गोल घूमते पंखे के नीचे, दो पीली स्फटिक-सी तेज़ आँखें और लम्बी सिलवटों से भरा तंग मोतिया चेहरा जोकि ठीक उन्हीं रोशनदानों में से भीतर से बाहर पार जाने के लिए ही मानों अपनी दृष्टि केन्द्रित कर रहा है। आँखों से आँखें लड़ पड़ती हैं, ध्यान से एक-दूसरे की ओर देखती हैं। स्तब्ध, एकाग्र।"

'मैं' और जनाना जिस्म वाले आदमी के बीच के संवाद के माध्यम से कहानी अपना विस्तार करती है। इस संवाद का हेतु क्लॉड ईथरली है। जनाना जिस्म वाले आदमी से 'मैं' सर्वप्रथम यह जानना चाहता है कि जिस इमारत में उसने क्लॉड ईथरली को देखा वह इमारत कौन सी है। जनाना जिस्म वाले आदमी (जिसे सी. आई.डी. भी बताया गया है) की प्रक्रिया इस सन्दर्भ में यह होती है—"जानते नहीं हो, यह पागलखाना, प्रसिद्ध पागलखाना।" उत्तर का अनुतान वैसा ही है जैसे कोई

आश्चर्य व्यक्त कर रहा हो कि 'तुम अमेरिका को न
और मनमानी हरकतों का समीकरण पागलखाने से
ओर इशारा कर ही देता है।

धनी देशों की स्वार्थपरकता जब मनमानी की
युद्धोन्मुखी, मानसिकता को रूपायित कर मानवीय
मानसिकता जब संस्कृति पर अपना वर्चस्व स्थापित
भय स्वतः ही रूपायित होने लगता है। यह भय, भ
अलंकरण बनता है। इस भय के ही समान मनमानी
नहीं जा सकती। भीतर के निषेध के बावजूद व्यवहा
व्यक्ति बाध्य होता चला जाता है। 'बाहरी एवं भीत
की स्थिति से इतर नहीं है क्लॉड ईथरली की स्थिति
दिया गया है, उसकी ओर जाने वाला रास्ता बाहर

क्लॉड ईथरली के जीवन से जुड़े सत्य जनाना जि
ही कहानी में आते हैं। क्लॉड ईथरली वह अमेरिकी
पर बम गिराया था। ध्वंस का शिकार बने हिरोशि
देती है। उस आदिवासी रोमन कैथलिक ईसाई को
हथियार है उससे इतना बड़ा विनाश होगा। भयान
ईथरली के भीतर उभरकर बढ़ने लगता है और व
में स्वीकारने लगता है। लेकिन अमेरिकी सरकार
उसे इनाम देती है। यहाँ दो स्थितियाँ हैं जो परस्
और इन दोनों के बीच है एक आदमी या संवेदन
के समक्ष ऐसा अपराधी है जिसने जघन्य अपराध
ताण्डव रचा है। दूसरी ओर इसी नृशंसता को दे
रहा है। उसे 'ग्लोरिफाई' किया जा रहा है। क्लॉ
इसके लिए कारण जुटाता है परन्तु हर बार उसे
जाता है कि उसे 'वार हीरो' का ख़िताब मिल

क्लॉड ईथरली ने मैनटूथ नामक गुण्डे के
फिर डैल्लोस में कैशियर पर सशस्त्र आक्रमण
शब्द विशेषण के रूप में जुड़ सकता है परन्तु
वह प्रख्यात युद्धवीर है क्योंकि उसने जो जघन्य
का लेबल लगा है।

कहानी में जनाना आदमी से क्लॉड ईथरली
महसूस करता है—"मैं सचमुच इस दुनिया में न
ऊपर आ गया हूँ जहाँ से आकाश, चाँद, तारे,